③ (i) Lectur Series No. - 40

Online class.
Date-12/5/2020.
Time-10:50 to 11:40 AM

Topic,

(1) Knowladge.

Dr. Surita Kumari
Depart. of Philosophy
B.A Part - II paper III (H.)
A.N.D. College Shahpur patory,
Samastipur.

Ans:- ज्ञान आत्मा का गुण है। यथार्थ ज्ञान (प्रमा) की प्राप्ति तभी हो सकती है जब कोई ज्ञान प्राप्त करने वाला हो। (ज्ञान प्राप्त करना) ज्ञान प्राप्त करने वालों को प्रमाता कहते हैं। प्रमा की उत्पत्ति के लिए किसी चेतन मनुष्य का रहना अत्यावश्यक है।

(i) प्रमेय (Objects) (Objects of knowledge) :- ज्ञान किसी-न-किसी विषय का होता है। प्रमाणशास्त्र के बाद न्याय दर्शन का महत्वपूर्ण अंग विचार है। न्याय के ईश्वर संबंधी विचार भारतीय दर्शन में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। न्याय ने ईश्वर को एक आत्मा

P.T.O.

(ii) प्रमाता (Knower) :→ ज्ञान आत्मा का गुण है। अर्थात ज्ञान (प्रमा) की प्राप्ति तभी हो सकती है जब कोई

ज्ञान प्राप्त करने वाला हो। ज्ञान प्राप्त करने वाले को प्रमाता कहते हैं। प्रमा की उत्पत्ति के लिए किसी चेतन मनुष्य का रहना आवश्यक है।

(iii) (objects of knowledge) :→
ज्ञान किसी-न-किसी विषय का होता है। प्रमाता को शून्य का ज्ञान नहीं हो सकता। प्रमाता को ज्ञान की अनुभूति तभी होती है।

जब कोई-न-कोई विषय हो।

दूसरे शब्दों में ज्ञान की सार्थकता के लिए कुछ विषय का रहना अनिवार्य है। ज्ञान के विषय को ही

प्रमेय का संज्ञा के द्वारा समझाया जा सकता है। कुछ विषय का रहना अनिवार्य

P.T.O.

है। ज्ञान के विषय को प्रमेय कहा जा सकता है।

(iv) प्रमाण (Sources of Knowledge):-

प्रमाता और प्रमेय के रहने के बावजूद ज्ञान तब तक नहीं हो सकता।

जब तक ज्ञान का कोई साधन नहीं हो।

ज्ञान के साधन को प्रमाण कहते हैं। उपरोक्त विवेचन से यह प्रमाणित होता है। आखिर ज्ञान किसे कहते हैं। ज्ञान को हम किस प्रकार व्यक्त करते हैं। ज्ञान कितने प्रकार के होते हैं।

निष्कर्ष :- तब ज्ञान के विषय में हम सोचते हैं। इन्द्रियां अनुभूति द्वारा ज्ञान प्राप्त करना / या अनुमान के द्वारा ज्ञान प्राप्त करना अपने मन में यही सब बातों को अपने शब्दों को व्यक्त करना में दोनों प्रकार के ज्ञान अपने-अपने दृष्टिकोण से सत्य है। etc

END